32

बड़े संदेश वाली एक छोटी पुस्तक

(10:1-8, 11)

हमारे पिछले दो पाठ छठी तुरही के इर्द-गिर्द घूम रहे थे। अध्याय 10 के आरम्भ में हम अन्तिम तुरही से धमाके की प्रतीक्षा करते हैं। इसके बजाय, अन्य दर्शनों के लगभग दो अध्यायों से विवरण में खलल पड़ जाता है। 11:15 तक अन्तिम तुरही नहीं बजती।

छठी मुहर (6:12-17) और सातवीं मुहर के खुलने (8:1-5) के बीच ऐसा ही खलल पड़ा था। उन दो मुहरों के बीच हमने 1,44,000 के मुहर किए जाने (7:1-8) और सिंहासन के सामने अनगिनत भीड़ का दर्शन देखा था (7:9-17)।

परन्तु मुहर का खलल तुरही के खलल से अलग है, क्योंकि मुहरों के बीच का अन्तराल मुख्यतया कलीसिया को *शांति* देने के लिए बनाया गया था, जबकि तुरहियों के बीच का अन्तराल कलीसिया को *चुनौती* देने के लिए था। विवरण के पिछले अन्तराल में ''इन समस्याओं के आने पर कलीसिया का क्या *होगा*?'' प्रश्न का उत्तर था, जबकि इस अन्तराल में ''इन कठिन समयों में कलीसिया को क्या *करना* चाहिए?'' प्रश्न पर ध्यान दिया गया है।

मैं जल्दी से यह कह दूं कि मैंने ''खलल,'' ''अन्तराल'' और ''विराम'' जैसे शब्दों का इस्तेमाल तो किया है, परन्तु मैं यह सुझाव नहीं दे रहा कि 10:1-11:14 अनावश्यक हैं या यूहन्ना प्रकाशितवाक्य के उद्देश्य से फिर गया। प्रकाशितवाक्य की आरम्भिक पक्तियों में ही, इस पुस्तक के संदेश को सुनने और ''मानने'' वाले के लिए विशेष आशीष बताई गई है (1:3)। 10:1-11:14 जैसे भागों के बिना हमें यह पता नहीं चल पाना था कि हमारे लिए क्या ''मानना'' आवश्यक है। यह स्पष्ट घुमावदार मार्ग पुस्तक के अधिक मूल्यवान भागों में से है। इनमें मसीही लोगों को कार्य के बीच में रखकर परमेश्वर की महान योजना में हमें हमारा योगदान बताया गया है।

10:1-11:14 में तीन विशेष चुनौतियों को विस्तार दिया गया है। पहली चुनौती अध्याय 10 में मिलती है, जो परमेश्वर के संदेश और इस पर ध्यान देती है कि इसे कैसे ग्रहण किया जाए। इस पाठ में हम उस संदेश के लिए *धन्यवाद* देने की आवश्यकता पर ध्यान लगाएंगे। अगले पाठ में संदेश के *उपयुक्त होने* पर बात करेंगे।

संदेश की शान को सराहें (10:1, 2)

पाप से भरे समाज को देखकर कई बार हम अपने आप को नकारा और शक्तिहीन समझते हैं। रोम की शक्ति और सामर्थ के सामने आरम्भिक कलीसिया के लोगों को भी ऐसा ही लगता होगा। अध्याय 10 के आरम्भिक दृश्य में शक्ति और सामर्थ पर एक अलग दृष्टिकोण दिया गया है, जिसमें परमेश्वर ने यूहन्ना तक संदेश पहुंचाने के लिए एक बहुत बड़े व्यक्ति को भेजा:

> फिर मैंने एक और शक्तिशाली[1] स्वर्गदूत को बादल ओढ़े हुए स्वर्ग से उतरते देखा, उसके सिर पर मेघधनुष था: और उसका मुंह सूर्य का सा और उसके पांव आग के खम्भे के से थे। और उसके हाथ में एक छोटी सी खुली हुई पुस्तक थी (आयतें 1, 2क)। (छोटी पुस्तक लिए स्वर्गदूत का चित्र देख।)

पहले यूहन्ना ने, "एक शक्तिशाली स्वर्गदूत को" यह पुकारते हुए देखा था कि "इस पुस्तक के खोलने और उसकी मुहरें तोड़ने के योग्य कौन है?" (5:2)। अब, "एक और बलवन्त स्वर्गदूत" दिखाई दिया।

अमेरिका में स्वर्गदूत बहुत प्रिय माने जाते हैं। स्वर्गदूतों की तस्वीरें और अन्य रूप कई घरों की सजावट हैं। परन्तु इन बाज़ारी वस्तुओं में से कोई भी प्रकाशितवाक्य 10 वाले बादलों में लिपटे मेघधनुष का मुकुट लिए चमकते चेहरे और चमचमाती टांगों वाले स्वर्गदूत से नहीं मिलती। यूजीन पीटरसन का अवलोकन है कि प्रकाशितवाक्य वाले स्वर्गदूत "रूबेन्स के तेलों वाले मोटे-मोटे पसंद किए जाने वाले[2] या क्रिसमस पर खेले जाने वाले नाटकों में कहकहे लगाने वाली, चमचमाती झालर पहने लड़कियां नहीं, बल्कि वास्तविक स्वर्गदूत अर्थात अपने नथनों में नरक के विशाल, भयंकर, समुद्री जीवों और आंखों में स्वर्ग लिए अपोकलिप्टिक वाले स्वर्गदूत थे।"[3] माइकल विल्कोक ने कहा है कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक से "ढीले से हो सारंगियां बजाने वाले स्वर्गदूतों के निर्बल जीवों का कोई भी विचार निकाल दिया जाना चाहिए।"[4] को हटाया जाना चाहिए।

आयत 1 वाले शक्तिशाली स्वर्गदूत का विवरण हमें पिता और पुत्र दोनों के सम्बन्ध में पहले इस्तेमाल किए गए शब्दों का स्मरण कराता है। स्वर्गदूत "बादल ओढ़े हुए" था और यीशु "बादलों के साथ आने वाला है" (1:7)। दूत "के सिर पर मेघधनुष था" और परमेश्वर के "सिंहासन के चारों ओर मेघधनुष" था (4:3)। स्वर्गदूत का मुंह "सूर्य के समान" था, वैसे ही मनुष्य के पुत्र के दर्शन में यीशु का चेहरा "ऐसा प्रज्वलित था, जैसा सूर्य कड़ी धूप के समय चमकता है" (1:16)। स्वर्गदूत के पांव "आग के खम्भे के समान" थे, जो हमें यीशु के पांवों का स्मरण कराता है, जो "उत्तम पीतल के समान थे, जो मानो भट्ठी में तपाया गया हो" (1:15)। ये तथ्य इन विवरणों के अलावा कि स्वर्गदूत स्वर्ग से आया था, इस बात पर भी ज़ोर देते हैं कि वह प्रभु का भेजा हुआ था।[5]

न्याय के प्रतीकों (बादल, सूर्य, जलते हुए खम्भे) का मेल और अनुग्रह का प्रतीक (मेघधनुष) स्वर्गदूत द्वारा लाए न्याय और अनुग्रह के एक कड़वे-मीठे संदेश (10:9,10)

से मेल खाते हैं।

यह संदेश उसके हाथ में "छोटी सी खुली हुई पुस्तक" में था (आयत 2)। यह छोटी, खुली पत्री इस अध्याय का मुख्य केन्द्र है; इसका उल्लेख ग्यारह बार हुआ है।[7] अध्याय के आरम्भ के विवरण से परमेश्वर की ओर से भेजे गए इस मोती की तैयारी होती है, जिसमें इसके महत्व पर ज़ोर दिया गया है। लियोन मौरिस ने लिखा है:

> संसार ने मसीही लोगों को एक छोटी, महत्वहीन कलीसिया के सदस्यों के रूप में तुच्छ जाना। इसमें वह सब था, जिसे वे नगण्य मानते थे। परन्तु उनका विश्वास परमेश्वर के वचन पर था और वह वचन इस शक्तिशाली व्यक्ति के हाथों में था, जो पृथ्वी और समुद्र दोनों तक फैला हुआ है। परमेश्वर का वचन सबसे महत्वपूर्ण है। यह मनुष्य के सब मामलों में सबसे ऊपर है।[8]

मौरिस ने उस छोटी पुस्तक को "परमेश्वर का वचन" कहा है। इससे हम इस प्रश्न पर आते हैं कि "वह 'छोटी पुस्तक' क्या *थी*?" कुछ बातें हम निश्चितता से कह सकते हैं।[9] (1) पुस्तक परमेश्वर की समस्त योजनाओं और उद्देश्यों से सम्बन्धित थी: इस पाठ में आगे "परमेश्वर का गुप्त मनोरथ" (10:7) वाक्यांश पर नोट्स देखें। (2) यह सुसमाचार से जुड़ी थी: 10:7 में अनुवादित शब्द "सुसमाचार ... दिया"[10] के मूल यूनानी शब्द का अर्थ "सुसमाचार सुनाया गया" है।[11] (3) इसका संदेश कड़वा भी था और मीठा भी (10:9, 10)। (4) इसकी बातें भविष्यवाणी के यूहन्ना के काम से सम्बन्धित थीं: पुस्तक को खा लेने के बाद यूहन्ना उस काम को फिर करने को तैयार था (10:10, 11)।

अधिकतर लेखक यह मानते हैं कि वह छोटी पुस्तक पूरी या उसका भाग, बाइबल ही थी। कुछ यह मानना पसन्द करते हैं कि इसमें पुराने नियम के भाग थे, जो प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का आधार थे। कुछ यह मानते हैं कि वह छोटी पुस्तक पूरी तरह से नया नियम थी। एक और प्रसिद्ध व्याख्या है कि उस छोटी पत्री में प्रकाशितवाक्य का वह भाग था, जो पहले यूहन्ना पर प्रकाशित नहीं किया गया था: शायद अध्याय 11 या अध्याय 12 से लेकर पुस्तक के अन्त तक।[12]

वचन में यहां यह स्पष्ट नहीं बताया गया कि उस छोटी पुस्तक में क्या था, जिस कारण हम इस मामले में साफ कुछ नहीं कह सकते।[13] परन्तु हम इस बारे में स्पष्ट हो सकते हैं कि उस छोटी पत्री में *परमेश्वर की ओर से* संदेश था, जिस कारण वह बहुत महत्वपूर्ण थी!

परमेश्वर जब भी बात करे, लोगों को सुनने के लिए तैयार रहना आवश्यक है (भजन संहिता 81:8, 11, 13)।

संदेश की सर्वव्यापकता को समझें (10:2, 3, 5, 8, 11)

अगले विवरण में, जिसमें स्वर्गीय दूत ने "अपना दाहिना पांव समुद्र पर[14] और बायां पृथ्वी पर रखा" (आयत 2ख) संदेश के महत्व पर और ज़ोर दिया गया। वचन में यहां इस विवरण का उल्लेख तीन बार हुआ है (आयतें 2, 5, 8), जो उसके विशेष महत्व का संकेत है।

स्वर्गदूत का ढंग एक विजयी नायक वाला था। यह तथ्य कि उसके पांव ज़मीन पर और समुद्र पर थे, इस बात का संकेत है कि उसे दोनों पर अधिकार था। इसमें यह भी सुझाव है कि उसके द्वारा लाया गया संदेश *विश्वव्यापी* था। यह निष्कर्ष इस तथ्य से निकाला जाता है कि स्वर्गदूत बड़े ज़ोर से चिल्लाया (आयत 3), जिसकी आवाज़ पूरी सृष्टि तक गई होगी। (आयत 3 की तुलना 5:2, 3 से करें।) अध्याय के अन्तिम शब्दों से भी इस बात को बल मिलता है, जिसमें ज़ोर दिया गया है कि यूहन्ना की घोषणा में ''जातियां और भाषाएं और राजा'' थे (आयत 11) जिसे प्रकाशितवाक्य में कहीं और हर जगह रहने वाले हर व्यक्ति के लिए कहा गया है (देखें 7:9; 11:9; 17:15)।

परमेश्वर की योजनाओं और उद्देश्यों का प्रकाशन केवल कुछ चुने हुए लोगों के लिए ही नहीं है। यह ''सारे जगत'' के लिए (मरकुस 16:15), ''सब जातियों'' के लिए (मत्ती 28:19), ''सब लोगों'' के लिए है (1 तीमुथियुस 2:4; तीतुस 2:11) है, जिसमें मैं और आप भी शामिल हैं!

संदेश के नियन्त्रण को स्वीकार करें (10:3, 4)

छोटी पुस्तक के और महत्वपूर्ण पहलुओं में से एक यह है कि यह *खुली* थी, जिससे इसका संदेश हर कोई देख सकता था। यह जानना अद्‌भुत है कि ''सब कुछ, जो जीवन और भक्ति से सम्बन्ध रखता है'' (2 पतरस 1:3) उसे परमेश्वर ने हमारे लिए उपलब्ध कराया है। उसने वह सब कुछ प्रकट कर दिया है, जो मसीही जीवन बिताने और मरने पर स्वर्ग में उसके पास जाने के लिए हमें पता होना आवश्यक है।

दूसरी ओर, हमें *हर बात* का पता होना आवश्यक *नहीं* है;[15] इसलिए पिता ने कुछ सच्चाइयों को प्रकट *नहीं* किया है। ''गुप्त बातें हमारे परमेश्वर यहोवा के वश में हैं'' (व्यवस्थाविवरण 29:29क)। किसी ने कहा है, ''छिपाई गई बात का उतना ही महत्व है जितना प्रकट की गई का।''

कई ऐसी चीज़ें हैं, जिन्हें जानना हमें अच्छा लगता है, ऐसे प्रश्न हैं जिनके उत्तर हम जानना चाहते हैं, जिनके बारे में बाइबल कब्र की तरह शांत है। हमें याद रखना आवश्यक है कि बाइबल हमारी जिज्ञासा को शांत करने के लिए नहीं, बल्कि ''उपदेश, समझाने और सुधारने और धर्म की शिक्षा देने'' की आवश्यक बातें बताने के लिए दी गई है (2 तीमुथियुस 3:16)। घटनाओं का अगला क्रम अपने आप ही उस सच्चाई को दिखाता है कि कई बार परमेश्वर ऐसी जानकारी को अपने पास रख लेता है, जो उसके लोगों के लिए जानना आवश्यक नहीं होतीं।

स्वर्गदूत ''ऐसे बड़े शब्द से चिल्लाया, जैसे सिंह गरजता है;[16] और जब वह चिल्लाया तो गरजन के सात शब्द सुनाई दिए'' (आयत 3)। ''सात शब्द'' वाक्यांश हमारा ध्यान खींचता है। हमने सात कलीसियाओं के नाम पत्र, सात मुहरों वाली पुस्तक और सात तुरहियां देखी थीं। अब हमें ''गरजन के सात शब्द'' मिलते हैं (KJV)।[17] हम पूर्वानुमान लगाने लगते हैं कि यूहन्ना के लिए गरजन के शब्दों का क्या महत्व था और हमारे लिए क्या है?

यूहन्ना ने कहा, ''जब सातों गरजन के शब्द सुनाई दे चुके, तो मैं लिखने पर था'' (आयत 4क)।[18] यह एक स्वाभाविक प्रत्युत्तर था। उससे कहा जो गया था कि ''जो कुछ तू देखता है, उसे पुस्तक में लिख [यानी जो तू सुनता है]'' (1:11क)। उसे आज्ञा दी गई थी कि ''जो बातें तू ने देखी हैं और जो बातें हो रही हैं; और जो उसके बाद होने वाली हैं, उन सब को लिख ले'' (1:19)। सात तुरहियों के संदेश को सुनकर उसने अपनी कलम स्याही की दवात में डुबोई होगी और कलम खुद-ब-खुद चर्मपत्र पर चलने लग पड़ी होगी।

उसके लिखना आरम्भ करने पर आश्चर्य की बात है कि प्रभु ने उसे रोक दिया: ''और मैंने स्वर्ग से यह शब्द सुना, कि जो बातें गरजन के उन सात शब्दों से सुनी हैं, उन्हें गुप्त रख,[19] और मत लिख'' (आयत 4ख)।[20]

सात गरजनों वाला संदेश *क्या* था[21] और परमेश्वर ने यूहन्ना को उसे लिखने की अनुमति *क्यों* नहीं दी, पर चर्चा करने के लिए टीकाकारों को कई पृष्ठ इस्तेमाल करते देखना अद्‌भुत भी होता है और विस्मयकारी भी।[22] यदि परमेश्वर हमें उस ''क्या'' का अर्थ बताना चाहता, तो उसने यूहन्ना को इसे लिखने देना था। यदि वह हमें ''क्यों'' का अर्थ बताना चाहता, तो वह हमें बता सकता था। हमारे लिए प्रभु की खामोशी का सम्मान करना कितना कठिन है।

संयोगवश यह बात कि परमेश्वर ने यूहन्ना को सात गरजनों वाला संदेश लिखने नहीं दिया, का अर्थ है कि मसीह के आने का सही-सही समय जानने का दावा करने वालों में से कोई भी और विशेष और यह कि उस घटना के तुरन्त पहले और बाद में क्या होगा, की जानकारी को समझ नहीं सकता। क्योंकि पहेली का आवश्यक पहलू गायब है, जिस कारण उनके द्वारा बनाया गया अपोकलिप्टिक दृश्य संदेहास्पद है!

> गरजनों के मुहर किए की हमारी जानकारी का और महत्व है कि यह दिन ठहराने जैसी बातों के विरुद्ध चेतावनी है, जो इस पुस्तक पर आधारित भविष्यवाणी की कुछ स्कीमों की पहचान बन गई है।[23]

> ... भविष्य की भविष्यवाणियां करने में हमें बड़ी ही सावधानी बतरनी चाहिए क्योंकि हो सकता है कि हम किसी बहुत महत्वपूर्ण बात को नज़रअंदाज़ कर दें।[24]

> ... जब तक लोगों को पता नहीं चलता कि इन गरजनों में क्या कहा गया है (और इसका पता कभी नहीं चल पाएगा), तब तक इस भविष्यवाणी में बताई गई बातों की तिथियां बताना बन्द हो जाना चाहिए।[25]

यीशु ने कहा कि उसका आना अप्रत्याशित होगा (मत्ती 24:44; देखें 1 थिस्सलुनीकियों 5:2; 2 पतरस 3:10; प्रकाशितवाक्य 3:3)। उसने यह भी कहा, ''उस दिन और उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता, न स्वर्ग के दूत और न पुत्र, परन्तु केवल पिता'' (मत्ती 24:36)। मैं फिर कहता हूं कि हमें परमेश्वर की खामोशी को सिर आंखों पर बिठाना चाहिए।

संदेश की अपरिवर्तनीयता को मानें (10:5-7)

गरजनों में कही गई बातों को यूहन्ना को न लिखने का आदेश दिए जाने के बाद हमें एक गम्भीर दृश्य मिलता है। ''और जिस स्वर्गदूत को मैंने समुद्र और पृथ्वी पर खड़े देखा था; उस ने अपना दाहिना हाथ स्वर्ग की ओर उठाया'' (आयत 5)।[26] परमेश्वर के सामने जो स्वर्ग में वास करता है, शपथ लेने का यह पारम्परिक ढंग रहा है। (देखें व्यवस्थाविवरण 32:40; दानिय्येल 12:7.)[27]

फिर स्वर्गदूत ने ''जो युगानुयुग जीवता रहेगा, और जिसने स्वर्ग को और जो कुछ उसमें है, और पृथ्वी को और जो कुछ उसमें है, सृजा, उसी की शपथ''[28] खाई (आयत 6क)। किसी शपथ की इससे प्रभावशाली भूमिका कठिन होगी![29] इसलिए ली जाने वाली शपथ का परिणाम असामान्य होना चाहिए था:

> और [उसने] ... शपथ खाकर कहा, अब तो और देर न होगी। वरन सातवें स्वर्गदूत के शब्द देने के दिनों में जब वह तुरही फूंकने पर होगा, तो परमेश्वर का गुप्त मनोरथ उस सुसमाचार के अनुसार, जो उस ने अपने दास भविष्यवक्ताओं को दिया, पूरा होगा (आयतें 6, 7)।

इस पवित्र शपथ के पूरे महत्व को समझने के लिए हमें इसके दो शब्दों की समीक्षा करनी होगी। पहला, आइए ''देर'' शब्द को देखते हैं: KJV में ''देर'' के बजाय ''समय'' है, जो बुरा अनुवाद नहीं है, क्योंकि यूनानी शब्द *chronos* है, जो ''समय'' के लिए यूनानी शब्दों में से एक है।[30] KJV के अनुवाद के आधार पर लोगों ने यह शिक्षा बना ली कि, अनन्तकाल के आरम्भ होने पर ''समय खत्म हो'' जाएगा। यह सच हो भी सकता है और नहीं भी।[31] परन्तु स्वर्गदूत के कहने का अर्थ यह नहीं था, स्वर्गदूत तो इस बात पर ज़ोर दे रहा था कि ''परमेश्वर के गुप्त मनोरथ'' *का समय* पूरा होने *को था* यानी इसके पूरा होने में *और समय नहीं लगना* था। *chronos* का अनुवाद ''देर'' भी हो सकता है,[32] और ''देर'' वचन में दी गई बात को सही-सही पहुंचाता है, इसलिए NASB, NKJV तथा कई अन्य अनुवादों में इस शब्द का इस्तेमाल हुआ है।

दूसरा, हमें ''परमेश्वर के गुप्त मनोरथ'' वाक्यांश की समीक्षा करनी चाहिए। ''गुप्त'' शब्द (जिसका इस्तेमाल पूरे नये नियम में हुआ है[33]) का उन लोगों द्वारा बहुत ही दुरुपयोग हुआ है, जो बाइबल को रहस्यमयी पुस्तक बनाना चाहते हैं जिसकी ''गहरी सच्चाइयों''[34] को केवल विशेष समझ रखने वाले कुछेक लोग ही समझ सकते हैं। आमतौर पर नये नियम में ''रहस्य'' शब्द का इस्तेमाल उस अर्थ में नहीं होता जिसमें ''समझ चकरा जाए या भ्रम में पड़ जाए।''[35] बल्कि ''गुप्त मनोरथ'' शब्द उसके लिए इस्तेमाल होता है, जिसकी कालांतर में समझ नहीं थी, *परन्तु अब प्रभु द्वारा उसे प्रकट कर दिया गया है*।[36] इसलिए पौलुस ने ''उस भेद की जो समयों और पीढ़ियों से गुप्त रहा, परन्तु *अब* उसके उन पवित्र लोगों पर प्रकट हुआ है'' (कुलुस्सियों 1:26) बात की। इफिसियों को लिखते हुए उसने ज़ोर दिया कि परमेश्वर ने ''गुप्त मनोरथ को हम पर *प्रकट किया है*'' (इफिसियों 1:9; देखें

इफिसियों 3:3, 4, 9)।

यह ''गुप्त मनोरथ'' क्या है, जो किसी समय ''छिपा हुआ'' था, परन्तु अब ''उसके पवित्र लोगों पर प्रकट कर दिया गया [या बता दिया गया] है''? नये नियम में, हम ''परमेश्वर के राज्य के भेद'' (मरकुस 4:11), परमेश्वर की योजनाओं और उद्देश्यों में अन्यजातियों के मिलाए जाने के ''भेद'' (रोमियों 11:25; इफिसियों 3:4-6), पुनरुत्थान के ''भेद'' (1 कुरिन्थियों 15:51), मसीह और उसकी कलीसिया के ''भेद'' (इफिसियों 5:32), ''सुसमाचार के भेद'' (इफिसियों 6:19), ''मसीह के भेद'' (कुलुस्सियों 4:3), ''विश्वास के भेद'' (1 तीमुथियुस 3:9) और देहधारी होने के ''भेद'' (1 तीमुथियुस 3:16) के बारे में पढ़ते हैं। ये ''भेद'' उस एक बड़े ''भेद'' अर्थात *यीशु में और उसके द्वारा छुटकारे की परमेश्वर की योजना* का भाग हैं।

पौलुस ने ''परमेश्वर के गुप्त मनोरथ'' की परिभाषा बताते हुए कहा है कि हम ''मसीह को पहचान लें, जिसमें बुद्धि और ज्ञान के सारे भण्डार छिपे हुए हैं'' (कुलुस्सियों 2:2, 3)। कुलुस्सियों 1:26, 27 में उसने ''गुप्त मनोरथ'' को ''मसीह जो महिमा की आशा है, तुम में रहता है'' कहा। इफिसियों 3 में ''भेद'' के बारे में लिखते हुए (आयतें 3, 4, 9) उसने ''सुसमाचार'' की अनिवार्यता (आयत 6) और ''कलीसिया'' (आयत 10) के महत्व की बात की और फिर कहा कि ''उस सनातन मंशा के अनुसार जो उसने हमारे प्रभु मसीह यीशु में की थी'' (आयत 11)। रोमियों की पुस्तक का सारांश उसने ''सुसामाचार अर्थात यीशु मसीह के संदेश के प्रचार के उसे भेद के प्रकाश के अनुसार, जो सनातन से छिपा रहा, परन्तु अब प्रकट होकर ... सब जातियों को बताया गया है कि वे विश्वास से आज्ञा मानने वाले हो जाएं'' कहकर दिया (रोमियों 16:25, 26)।

प्रकाशितवाक्य 10 में स्वर्गदूत ने कहा था कि परमेश्वर ने छुटकारे का यह अद्भुत ''भेद ... अपने दास भविष्यवक्ताओं को दिया'' (आयत 7ख)।[37] उसने आगे ज़ोर दिया कि परमेश्वर की योजनाएं और उद्देश्य सातवीं तुरही बजने पर ''पूरे'' होंगे (आयत 7क; देखें 11:15[38])। विल्कोक ने स्वर्गदूत के शब्दों को इस प्रकार संक्षिप्त किया है: ''परमेश्वर की समयसारिणी की अगली घटना सातवीं तुरही के बाद ही होगी, और वह अन्त होगा।''[39]

स्वर्गदूत घोषणा कर रहा था कि परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं *पक्की* हैं। अन्याय की रोमी सरकार की समयसारिणी ने परमेश्वर के न्याय की समयसारिणी में दूसरा स्थान लेना था; वे प्रभु के आदेशों को ठुकरा नहीं सकते थे।

परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं आज भी वैसे ही हैं। परमेश्वर का वचन मिटता नहीं (मत्ती 24:35; 1 पतरस 1:23)। आप इसे गांठ बांध सकते हैं!

सारांश

छोटी पुस्तक और जो कुछ भी थी, इसमें परमेश्वर की ओर से संदेश था और इस कारण इसमें उसके मुंह से निकली हर बात की खूबी थी: यह संदेश शानदार, विश्वव्यापी, सीमित, और अपरिवर्तनीय था। इसलिए यूहन्ना को इसे सराहना, प्रशंसा करना, मानना और

ग्रहण करना आवश्यक था। वैसे ही जैसे हमें आज के लिए परमेश्वर के संदेश अर्थात बाइबल को ग्रहण करना आवश्यक है।

आज संसार एक पागलपन की खोज में लगा हुआ है, जिसे ''सत्य'' कहा जाता है, परन्तु उसे यह अहसास नहीं है कि वास्तविक सच्चाई एक फटी-पुरानी बाइबल में भी मिल जाती है, जिसे आमतौर पर घर के किसी कोने में रखा हुआ होता है। एक कवि ने कहा है:

> सच्चाई की खोज में हम संसार की खाक छानते; हम
> उकेरे हुए पत्थर और लिखी हुई पत्री
> और आत्मा के फूलों के सभी पुराने खेतों में
> भलाई, शुद्धता, सुन्दरता को ढूंढ़ते हैं;
> और थक कर चूर हुए खोजी,
> उसे जानने के लिए जो सब ज्ञानियों ने कहा है कि
> उस पुस्तक में है, जिसे हमारी माताएं पढ़ती थीं।[40]
> निढाल हो कर हम वापस आ जाते हैं,

क्या हम बाइबल के लिए धन्यवाद देते हैं? क्या हम इसे सराहते हैं? क्या हम इसे मानते हैं? क्या हम इसे अपने जीवन के लिए नियम के रूप में ग्रहण करते हैं? यदि करते हैं, तो हम इसकी बातों को मानेंगे।[41]

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

इस और अगले पाठ को दो मुख्य प्वाइंटों (1) संदेश को सराहें; (2) संदेश को अपना लें, से एक ही पाठ में मिलाया जा सकता है। अध्याय को विभाजित करने का एक और ढंग (1) संदेश का स्वभाव और (2) संदेश की मांगें होगा।

''चर्च ऑफ़ प्रोफेट्स एण्ड मार्टिस'' नामक अप्रकाशित संदेश में जॉन रिसे ने अध्याय 10 को स्वर्गदूत के दृष्टिकोण से बताया है: (1) स्वर्गदूत का विवरण (आयतें 1-4), (2) स्वर्गदूत की घोषणा (आयतें 5-7), (3) स्वर्गदूत की दिशाएं (आयतें 8-11)।

अध्याय 10 लेखकों का ध्यान खींचता है। इन वचनों पर पाठ के लिए सम्भावित शीर्षक हैं: ''द अबाइडिंग वर्ड,''[42] ''द फिनिशड मिनिस्ट्री,''[43] ''मिस्ट्री ऑफ़ द मर्सी''[44] ''गास्पल ऑफ़ रिडप्शन।''

टिप्पणियां

[1]सभी स्वर्गदूत शक्तिशाली, या वीर हैं (देखें भजन संहिता 103:20), परन्तु स्पष्टतया कुछ स्वर्गदूत दूसरों से शक्तिशाली हैं। (अर्थात, कुछ स्वर्गदूतों को दूसरों से अधिक शक्ति और अधिकार मिला है।) [2]पीट पौल रूबेंस (1577-1640) अपने समय का सबसे प्रसिद्ध उत्तरी बेल्जियम का चित्रकार था। उसके कई

प्रसिद्ध चित्र धार्मिक थीम वाले हैं। [3]यूजीन एच.पीटरसन, *रिवर्सड थंडर* (सैन फ्रैंसिस्को: हार्परकौलिंस पब्लिशर्स, 1988),104. [4]माइकल विल्कोक, *आई सॉ हैवन ओपन्ड: द मैसेज ऑफ़ रैवलेशन,* द बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1975), 100. [5]कुछ लोगों का विचार है कि स्वर्गदूत यीशु ही था, परन्तु ऐसा लगता नहीं क्योंकि (1) यीशु को पुस्तक में कहीं स्वर्गदूत नहीं कहा गया। (2) "एक और" शब्द यूनानी भाषा के उस शब्द का अनुवाद है, जिसका अर्थ है "*वैसा ही* एक और।" (3) यह मानना कठिन है कि महिमा पाया हुआ प्रभु ऐसे शपथ खाएगा, जैसे आयत 6 में स्वर्गदूत ने खाई थी। स्वर्गदूत को किसी विशेष स्वर्गदूत (उदाहरण के लिए, जिब्राइल) या इतिहास के किसी मनुष्य से मिलाने के और प्रयास हुए हैं। जहां तक वचन की बात है, यह प्रभु द्वारा सेवा में बुलाया गया केवल "एक और [अनाम] शक्तिशाली स्वर्गदूत" है। [6]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक "प्रकाशितवाक्य, 2" में मेघधनुष पर टिप्पणियां देखें। [7]इस वाक्य में सर्वनाम सम्मिलित है, जो छोटी पुस्तक का संकेत देता है। [8]लियोन मौरिस, *रैवलेशन,* संशो. संस्क., द टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस कं., 1987), 134. [9]सम्भवतया यह अध्याय 5 वाली मुहर की हुई पुस्तक *नहीं* थी: (1) अध्याय 5 वाली पुस्तक का आकार स्पष्टतया सामान्य था, जबकि यह पुस्तक "छोटी" थी (हिन्दी में इसे "पुस्तिका" कहा जाएगा)। (2) अध्याय 5 वाली पुस्तक मुहर के साथ आरम्भ हुई थी; जबकि यह खुली थी और इसमें इस्तेमाल वाक्यों में संकेत है कि यह आरम्भ से लेकर अन्त तक खुली है। [10]KJV में "declared" है।

[11]"सुनाया गया" *euangelion* के अर्थात "शुभसमाचार" या "सुसमाचार" के लिए शब्द का क्रिया रूप है। NASB बाइबल का मार्जिन नोट देखें। [12]मैं इस विचार को मानता हूं कि छोटी पुस्तक में अध्याय 12 से आगे था। छोटी पुस्तक से यूहन्ना "राजाओं" के पास प्रचार करने के योग्य हो गया (10:11) और अध्याय 17 राजाओं के बारे में बहुत कुछ कहता है। [13]इसमें 10:11 जैसा साधारण संदेश ही होगा। यूहन्ना को मालूम था कि प्रभु के लिए बोलने के लिए क्या आवश्यक है (उसके लिए खड़ा होने के परिणामों सहित) इसलिए प्रचार जारी रखने की चुनौती कड़वा-मीठा संदेश ही होना था। [14]अपने सुनने वालों के लिए इस दृश्य की परिकल्पना करते हुए आप समझा सकते हैं कि आग के खम्भे का पांव समुद्र में रखने पर वह कैसे खौला होगा। [15]कुछ सच्चाइयां दिए जाने पर हमें भी समझ नहीं आ सकतीं (यशायाह 55:8, 9)। [16]देखें यिर्मयाह 25:30; योएल 3:16; आमोस 3:8; होशे 11:10. [17]"गरजन के सात शब्द" वचन का मूल अनुवाद है। [18]यह हमें प्रकाशितवाक्य के समय अपनाए जाने वाले ढंग का सूत्र देता है। स्पष्टतया दर्शनों का अनुभव करते होने के बावजूद, यूहन्ना जो कुछ देख और सुन रहा था उसे लिख भी रहा था। [19]पहले हमने मुहर के तीन उद्देश्यों पर ज़ोर दिया था: (1) स्वामित्व की पुष्टि करना, (2) खरेपन को सुनिश्चित करना और, (3) सामग्री की रक्षा करना। (*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक "प्रकाशितवाक्य, 2" में 5:1 और 7:3 पर नोट्स देखें।) अपोकलिप्टिक साहित्य में कई बार मुहरों का अतिरिक्त उद्देश्य होता था: सामग्री को *छिपाना।* (दानिय्येल 12:4 की तुलना प्रकाशितवाक्य 22:10 से करें।) 10:4 में "गुप्त रख" का अर्थ वही है जो "उन्हें न लिख" का है (किसी चीज़ पर जो कागज़ के सामने नहीं रखी गई *मूलतः* "मुहर लगाना" असम्भव होना था)। [20]मनुष्य (पौलुस?) को जो उसने स्वर्गलोक में उठाए जाने पर देखा (2 कुरिन्थियों 12:4) उसे न बताने की आज्ञा में तुलना की जा सकती है।

[21]कई टीकाकार इस बात की ओर ध्यान दिलाते हैं कि प्रकृति की गरजन में कई बार तूफ़ान की घोषणा होती है जबकि बाइबल की गरजन में भय, शक्ति और न्याय का संकेत मिलता है (उदाहरण के लिए देखें प्रकाशितवाक्य 4:5; 6:1; 8:5; 11:19; 14:2; 16:18; 19:6)। वे निष्कर्ष निकालते हैं कि सात गरजनों का संकेत भक्तिहीनों पर परमेश्वर के अतिरिक्त न्याय से जुड़ा था। कई इसका सम्बन्ध भजन संहिता 29 से भी देखते हैं, जिसे रबी लोग "सात गरजनों वाला भजन" कहते थे। उस भजन में गरजन को परमेश्वर की आवाज़ कहा गया है और सात बार उसका उल्लेख है। वचन में, परमेश्वर की आवाज़ की तुलना आमतौर पर गरजन से की गई है (जैसे अय्यूब 26:14; 37:5; यूहन्ना 12:28, 29 में)। [22]इस बात पर, टीकाकार बहुत रचानात्मक हो जाते हैं। सम्भावित कारणों में "परमेश्वर ने भक्तिहीनों को और चेतावनी न देने का निर्णय ले लिया" से "हमारे दिमाग केवल इतना ही समझ सकते हैं" तक हो जाते हैं। [23]मौरिस, 135. [24]विलियम

हैंड्रिक्सन, *मोर दैन कंकरर्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1954), 150. [25]बर्टन काफ़मैन, *कमैंट्री ऑन रैवलेशन* (आस्टिन, टैक्सस: फर्म फाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1979), 225. [26]प्रकाशितवाक्य 10 के पहले भाग का दृश्य दानिय्येल (दोनिय्येल 12) के दृश्य से मिलता-जुलता है। आपको चाहिए कि उन ढंगों की ओर ध्यान दिलाते हुए, जिनमें वे एक जैसे हैं और जिनमें वे भिन्न हैं, दोनों दर्शनों की तुलना करें। [27]कई लोग सरकारी शपथ दिलाए जाने के समय बाइबल पर हाथ रखने से इनकार करते हैं, परन्तु स्वर्ग की ओर हाथ उठाने को तैयार होते हैं। स्पष्टतया वे इस बात से अनजान है कि दोनों ही भाव मूलत: एक ही बात को दर्शाते हैं। [28]परमेश्वर का विवरण सीधे तौर पर की गई वाचा से जुड़ा है: परमेश्वर अनादि है और सबका सृजनहार है, इसलिए उसका नियन्त्रण हर चीज़ पर है और वह अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार फल ला सकता है। [29]बाइबल काल में लोगों द्वारा ली जाने वाली तुच्छ शपथों के विरुद्ध है (मत्ती 5:34, 36; याकूब 5:12); यदि हम अपनी बात के पक्के हैं, तो ईश्वरीय बातों से असम्बद्ध बातों का हवाला देकर जवाब देना अनावश्यक है। दूसरी ओर, बाइबल सरकारी शपथ लिए जाने (गिनती 5:19; नहेम्याह 5:12; मत्ती 26:63, 64) बल्कि प्रभु के सामने गंभीर प्रतिज्ञाएं करने (मन्नतों) की भी अनुमति देती है (प्रेरितों 18:18; इब्रानियों 6:16)। कोई भी मन्नत माने जाने से पहले उस पर ध्यान से विचार कर लेना आवश्यक है क्योंकि एक बार मन्नत मान ली तो उसे पूरा न करना समझदारी नहीं (गिनती 30:2)। [30]*Chronos* वही शब्द है, जिससे इतिहास के लिए ''क्रोनोलॉजी'' अंग्रेजी शब्द निकला है।

[31]''समय'' जीवन की *घटनाओं की श्रृंखला* को कहने का केवल आसान ढंग है। अनन्त काल में घटनाओं की कोई श्रृंखला नहीं होगी, इस कारण यह कहना पूरी तरह से सही नहीं होगा कि ''समय बिल्कुल नहीं रहेगा।'' [32]एक और हवाले के लिए जहां *chronos* के एक रूप का अनुवाद ''थोड़ा समय'' हुआ है, देखें इब्रानियों 10:37. [33]देखे मत्ती 13:11; लूका 8:10; 1 कुरिन्थियों 4:1; इफिसियों 6:19; कुलुस्सियों 4:3. [34]*ट्रथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' में ''कब तक हे प्रभु?'' पाठ में ''गहरी बातें'' पर टिप्पणियां देखें। [35]नये नियम में कई बार ''भेद'' शब्द का यही अर्थ मिलता है (देखें 1 कुरिन्थियों 13:2; 14:2)। परन्तु नये नियम में तकनीकी अर्थ में इस्तेमाल करने पर ''भेद'' का संकेत उस की ओर होता है जो कभी छिपा हुआ था परन्तु अब प्रकट हो चुका है। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में भी, ''भेद'' शब्द का इस्तेमाल होने पर, आमतौर पर उसकी व्याख्या भी दी जाती है (1:20; 17:5, 7)। [36]''भेद'' शब्द का अर्थ यह है कि कुछ सच्चाइयों को मनुष्य नहीं समझ सकता था, यदि *परमेश्वर* को उन्हें प्रकट करने की आवश्यकता न लगी होती। [37]ज़ोर सम्भवतया यहूदी भविष्यवक्ताओं पर है परन्तु पहली शताब्दी में मसीही भविष्यवक्ता भी थे (प्रेरितों 13:1; 15:32; 21:10; 1 कुरिन्थियों 12:28, 29; 14:29, 32; इफिसियों 2:20; 3:5; 4:11)। ''भविष्यवक्ता'' शब्द परमेश्वर के लिए उसकी प्रेरणा से बोलने वाले वक्ता को कहा गया है। [38]इस पुस्तक में 11:15 पर नोट्स देखें। [39]विल्कोक, 101. [40]*मिरियम* (डेविड एफ.बरगेस, संकलन., *इन्साइक्लोपीडिया ऑफ़ सरमन इलस्ट्रेशन्स* [सेंट लुइस: कंकोडिया पब्लिशिंग हाउस, 1988], 23-24 में उद्धृत) में जॉन ग्रीनलीफ विटियर।

[41]इस पाठ का इस्तेमाल यदि आप प्रवचन के रूप में करते हैं तो समझाएं कि एक गैर मसीही परमेश्वर के पास कैसे आ सकता है और भटका हुआ मसीही घर वापस कैसे आ सकता है। इस पुस्तक में ''जगाने के लिए परमेश्वर की पुकार'' और ''पाप का स्व-विनाशकारी स्वभाव'' पाठों के सारांश देखें। [42]एल्बर्ट एच.बालडिंगर, *प्रीचिंग फ्राम रैवलेशन: टाइमली मैसेजस फॉर ट्रबल्ड हार्ट्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1960), 48. [43]मैरिल सी. टैनी, *प्रोक्लेमिंग द न्यू टैस्टामेंट: द बुक ऑफ़ रैवलेशन* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1963), 51.[44]डी. टी. नाइल्स, *ऐज़ सीइंग द इनविज़िबल: ए स्टडी आफ़ द बुक ऑफ़ रैवलेशन* (न्यू यार्क: हार्पर एण्ड ब्रदर्स पब्लिशर्स, 1961), 149. [45]वही. 149. [46]आर. सी. एच. लैंसकी, *इंटरप्रिटेशन ऑफ़ सेंट जॉन'स रैवलेशन* (कोलंबस, ओहायो: वार्टबर्ग प्रैस, 1951), 310.

विचार एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. छठी और सातवीं मुहर के बीच एक ''खलल'' पड़ा। अब छठवीं और सातवीं तुरही के बीच ''खलल'' बाहर है। इन दोनों ''रुकावटों'' में क्या अन्तर है ?
2. हमारे लिए इन ''रुकावटों'' का क्या महत्व है ?
3. प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का अध्ययन आरम्भ करने से पहले, आप स्वर्गदूतों को क्या समझते थे ? क्यों ?
4. अध्याय 10 वाले सामर्थी स्वर्गदूत का वर्णन करें। इस विवरण से आपके मन पर कुल मिलाकर प्रभाव क्या पड़ता है ?
5. आपको क्या लगता है कि वह छोटी पुस्तक क्या है ?
6. *आपको* क्या लगता है कि यूहन्ना को सात गरजनों वाला संदेश लिखने की अनुमति क्यों दी गई थी ?
7. आयत 6 में ''देर'' शब्द के अर्थ पर चर्चा करें।
8. आयत 7 में ''परमेश्वर का मनोरथ'' वाक्यांश के अर्थ पर चर्चा करें।

छोटी पुस्तक लिए स्वर्गदूत (10:1, 2)